2 मार्च 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का महोत्सव है। इस महोत्सव में पंचकल्याणक संबंधी क्रिया-प्रक्रियाओं के माध्यम से आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का प्रदर्शन होता है, विद्वानों के प्रवचनों के माध्यम से समागत श्रद्धालुओं को आत्मा से परमात्मा बनने की विधि बताई जाती है। **– पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महो.पृष्ठ 2**

वर्ष : 37, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में –

ताजा हुई पंचकल्याणक की मधुर स्मृतियाँ

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं डॉ. भारिल्ल के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त प्रतिदिन 5 प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ

● सी.डी. के माध्यम से पू. गुरुदेवश्री के प्रवचन ● जिनवाणी चैनल पर – डॉ. भारिल्ल के प्रवचन ● डॉ. भारिल्ल के प्रवचनसार पर विशेष प्रवचन ● पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वानों का समागम ● विशिष्ट महानुभावों का सम्मान समारोह ● टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा 'निमित्त-उपादान अदालत में' नाटक का मंचन ● बाल तीर्थंकर के जन्मोत्सव पर इन्द्रसभा राजसभा का आयोजन ● श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन ● रथयात्रा ● महामस्तकाभिषेक ● ग्रन्थों का विमोचन एवं मंगल आमंत्रण

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 20 से 22 फरवरी, 2015 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का तृतीय वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 21 से 27 फरवरी 2012 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित जिनालय का जयपुर में सम्पन्न ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति में आयोजित तीन दिवसीय तृतीय वार्षिकोत्सव में उपस्थित लोगों को ऐसा लगा मानो पंचकल्याणक दुबारा हो रहा हो।

इस अवसर पर दिनांक 20 फरवरी को प्रात: श्री महावीर पंचकल्याणक विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा को अत्यन्त संक्षेप में पूर्ण कर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर

(शेष पृष्ठ 2 पर ...)

श्री दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री अशोक बड़जात्या का अभिनन्दन

जयपुर : श्री दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या का दिनांक 20 फरवरी 2015 को श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से देशभर से पधारे सैंकड़ों मुमुक्षु भाई-बहिनों की उपस्थिति में, समाज के प्रति उनकी अमूल्य सेवाओं के लिये भावभीना अभिनन्दन किया गया।

उक्त अवसर पर बोलते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि अशोकजी समाज से सम्बन्धित कोई भी निर्णय गम्भीरतापूर्वक सोच-विचारकर करते हैं, साथ ही समाज के प्रति सदैव समर्पित एवं उसके हित में सदैव तत्पर रहते हैं।

उक्त अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुये श्री अशोकजी बड़जात्या ने महासमिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

राजस्थान सरकार के गृहमंत्री –

श्री गुलाबचंदजी कटारिया का अभिनन्दन

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में संचालित श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के परम सहयोगी, समाजसेवी श्री कटारियाजी का यहाँ वार्षिकोत्सव के अवसर पर विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में समाज के प्रति उनकी सेवाओं की अनुमोदना के लिये सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

उक्त अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने श्री कटारियाजी के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख करते हुये उनकी सादगी और सक्रियता की भूरी-भूरी सराहना की।

श्री कटारियाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि डॉ.भारिल्ल के जीवन, कृत्यों और उपदेशों से उन्हें गहरी प्रेरणा मिलती है और मैं अपना अधिकतम समय उनके सानिध्य में बिताना चाहता हूँ।

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने किया। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री महाचंदजी सेठी भीलवाड़ा एवं प्रवचन मंच का उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, टोडरमलजी के पट का अनावरण श्री कैलाशचंदजी सेठी परिवार एवं गुरुदेवश्री के पट का अनावरण श्री अजीतकुमारजी तोतूका परिवार के करकमलों से हुआ। समारोह का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष – दि.जैन महासमिति) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचंदजी कटारिया (गृहमंत्री–राजस्थान सरकार) मंचासीन थे। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका के अतिरिक्त विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' भोपाल, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री मंचासीन थे।

मंगलाचरण श्री गौरवजी सौगानी एवं मंच संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस महोत्सव में अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मार्मिक प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त महावीर पंचकल्याणक विधान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत जन्मोत्सव व 'निमित्त–उपादान अदालत में' नामक नाटक, मेधावी छात्र पुरस्कार वितरण समारोह, जिनेन्द्र भक्ति आदि अनेक कार्यक्रम विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र रहे।

'निमित्त–उपादान अदालत में' नामक नाटक का दृश्य

समारोह में आयोजित श्री महावीर पंचकल्याणक विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुशीला–शान्तिलालजी अलवरवाले जयपुर रहे। मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री जितेन्द्रजी जैन अमेरिका, श्री ताराचंदजी पाटनी बापूनगर जयपुर, एवं वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर थे।

विशिष्ट कार्यक्रम आमंत्रण – इस अवसर पर दिनांक 17 मई से 22 मई तक मुम्बई के उपनगर विलेपार्ले में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का श्री अक्षयभाई दोशी, श्री हितेनभाई अनंतभाई शेठ, श्री रजनीभाई हिम्मतनगर आदि महानुभावों ने आमंत्रण दिया। इसके साथ ही मेरठ (उ.प्र.) में लगने वाले दिनांक 24 मई से 10 जून तक होने वाले 49वें वीतराग–विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का श्री अजय जैन, श्री सौरभ जैन, रोहित जैन, विकास जैन आदि महानुभावों ने आमंत्रण दिया।

विधि–विधान एवं इन्द्रसभा आदि के संपूर्ण कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न हुये।

विधान में उपस्थित महानुभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते साधर्मीजन

शताधिक बालकों को महाविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करने वाले–

शिक्षाप्रेमी मास्टर के.सी. जैन का भावभीना अभिनन्दन

विषय परिस्थितियों और अत्यंत सीमित साधनों के बीच जिन्होंने जैनदर्शन और आध्यात्मिक शिक्षण को अपनी साधना का विषय बनाया और गाँव–गाँव घूमकर विगत 35 वर्षों से लगातार प्रतिवर्ष अनेक बालकों को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रवेश हेतु न केवल प्रेरित किया वरन अपने साथ लेकर प्रशिक्षण शिविरों में आये, 20 दिनों तक साथ रहे और उन्हें प्रवेश दिलाने में तन–मन–धन से सहयोग करते रहे, वह भी मूक रहकर, ऐसे धर्म प्रेमी मास्टर के.सी. जैन का पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में भावभीना अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर उनकी जीवनभर की साधना के लिये उन्हें शॉल ओढाकर, श्रीफल भेंटकर और प्रशस्ति–पत्र समर्पित करके सम्मानित किया गया। साथ ही उनके इस कार्य में सक्रियतापूर्वक सहयोगी बनने के लिये उनकी धर्मपत्नी को भी सम्मानित किया गया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए मास्टर साहब ने इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों का जिक्र करते हुए बतलाया कि वे किस प्रकार यह कार्य कर पाए। इस अवसर पर उन्होंने आगे भी आजीवन यह कार्य करते रहने का संकल्प व्यक्त किया और अन्य लोगों को भी इसमें जुड़ने की प्रेरणा दी।

उक्त अवसर पर बोलते हुए डॉ. भारिल्ल ने तत्त्वप्रचार के प्रति उनके समर्पण की अनुमोदना की और उन्हें अपना सम्पूर्ण सहयोग और समर्थन देने का आश्वासन दिया।

ज्ञातव्य है कि अब तक उनके द्वारा प्रेरित 70 से अधिक स्नातक, सफलतापूर्वक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेशचंदजी चांदवाड (मंत्री–श्री दि.जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर) ने की एवं मुख्य अतिथि श्री अजयजी जैन मेरठ एवं श्री सौरभजी जैन मेरठ थे। संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

श्रीजी की भव्य शोभायात्रा व महामस्तकाभिषेक संपन्न

जयपुर : दिनांक 22 फरवरी को श्री टोडरमल स्मारक भवन से जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

शोभायात्रा में श्रीजी को लेकर रथ में बैठने का सौभाग्य पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई को प्राप्त हुआ। रथ में सारथी के रूप में श्री ताराचंदजी पाटनी एवं श्री ताराचंदजी सोगानी थे। श्री सुरेशचंदजी शिवपुरी धर्मध्वजा लेकर जुलूस में सबसे आगे चल रहे थे। जिनेन्द्र भगवान के रथ के साथ मंगल कलश एवं जिनवाणी लेकर अनेक साधर्मी महिलायें तथा महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, जैन युवा फैडरेशन, जयपुर के सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों साधर्मी भाई अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे।

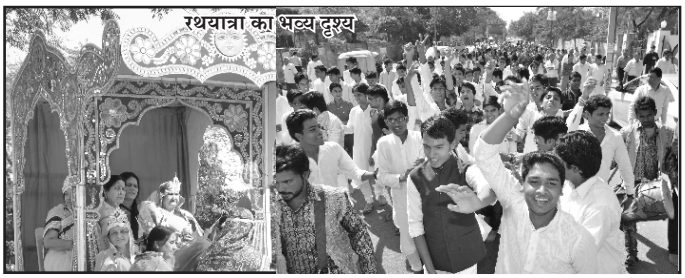
रथयात्रा का भव्य दृश्य

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले श्री सुशीलकुमारजी गोदीका परिवार एवं अन्य अनेक जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर एवं श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

यह शोभायात्रा श्री टोडरमल स्मारक भवन से राजेन्द्र मार्ग, सावित्री पथ, पार्श्वनाथ चैत्यालय होती हुई लगभग 2.5 कि.मी. का मार्ग तय कर श्री टोडरमल स्मारक भवन पहुँची। इस प्रकार अत्यंत उत्साहपूर्वक बापूनगर समाज में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा के उपरान्त सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

रथयात्रा व मस्तकाभिषेक के संचालन में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

सभी कार्यक्रमों के संयोजक श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी एवं संचालक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे।

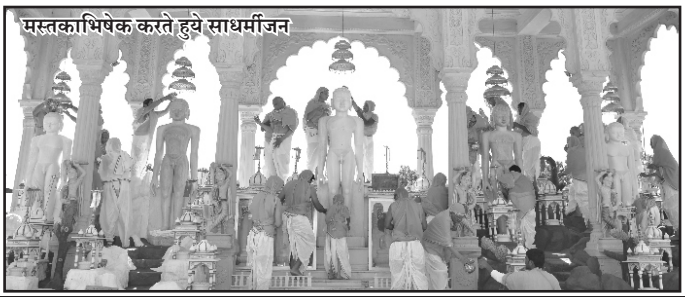
मस्तकाभिषेक करते हुये साधर्मीजन

(पृष्ठ 1 का शेष...) **श्री अशोकजी बड़जात्या का..**

उक्त अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल आदि अनेकों विद्वत्जनों के अतिरिक्त महासमिति के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पाटनी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री विपिन जैन मेरठ, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी बाकलीवाल इन्दौर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री सतीशजी जिन्द वाले, राज.अंचल के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी पाण्ड्या, राज.अंचल के महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी पाटनी आदि समाज के अनेक गणमान्य नेता मंचासीन थे।

सभा की अध्यक्षता श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री नरेशजी सेठी ने की एवं श्री अनिलजी जैन (आई.पी.एस.) मुख्य अतिथि थे। श्री अध्यात्म प्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया, सभा का संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...) **गुलाबचंदजी कटारिया का...**

उन्होंने भविष्य में भी संस्था की गतिविधियों में अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उक्त कार्यक्रम के आयोजन में महाविद्यालय के स्नातक श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा। समारोह की अध्यक्षता श्री दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या ने की।

समारोह का प्रारम्भ श्री गौरवजी सोगानी जयपुर द्वारा किये गये मंगलाचरण से हुआ और इस अवसर पर श्री कटारियाजी ने उनके द्वारा निर्मित आध्यात्मिक भजन की सी.डी. का विमोचन भी किया।

अभिनन्दन एक कर्मयोगी का

आजीविका के लिये काम सभी करते हैं पर वे विरले होते हैं, जिनके लिये उनका काम उनका मिशन होता है। जिनके लिये सिर्फ अपना काम, उद्देश्य और लक्ष्य महत्वपूर्ण होता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि रात है या दिन, होली है या दिवाली। काम करने वाले को काम करने का तो वेतन मिलता है, पर इसप्रकार के समर्पण से वे अभिनन्दनीय हो जाते हैं।

21 फरवरी 2015 को श्री टोडरमल स्मारक भवन में एक ऐसे ही कर्मयोगी **''श्री नेमीचंद गोधा''** का अभिनन्दन किया गया, जिनके बारे में कहा जाये कि यदि आपके घर में जिनवाणी है तो अवश्य ही उसमें श्री नेमीचंद गोधा का हाथ लगा होगा।

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में कार्यरत श्री नेमीचंद गोधा के लिये उनका काम उनका मिशन है और वे अनवरत विगत 47 वर्षों से समर्पित होकर इस काम में लगे हुये हैं।

उनकी इस आजीवन सेवा के लिये ट्रस्ट की ओर से टोडरमल स्मारक भवन के विशाल सभागृह में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर उन्हें रूपये 51 हजार का चैक भी प्रदान किया गया, जिसमें 25 हजार रूपये श्री महावीरजी पाटील सांगली द्वारा प्राप्त हुये। उक्त अवसर पर उनके परिजनों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में देशभर से पधारे सैंकड़ों मुमुक्षु भाई उपस्थित थे।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(सातवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा – ***अपने इस जीवन का आगामी काल और अपनी आगामी पीढी (हालांकि यह हम स्वयं नहीं हैं) भी हमें हमारी कल्पना में स्वीकृत है इसलिये हम उनकी चिन्ता भी करते हैं और इंतजाम भी; पर इस जीवन के बाद हमारे अपने अस्तित्व का भी असंदिग्ध (संशय रहित) भरोसा हमें नहीं है, बस इसलिये उसके प्रति हमारा रवैया भी लापरवाही भरा होता है। यदि हमें इस जीवन के बाद भी अपने अस्तित्व के बारे में संशय रहित विश्वास हो तो हम उसके लिये कुछ भी न करें और उसके प्रति लापरवाह बने रहें यह सम्भव ही नहीं।***

अब आगे पढिये कि किसप्रकार हम अपने भविष्य के लिये कुछ भी कीमत चुकाने के लिये तैयार रहते हैं –

यदि हमें अपने भविष्य का भरोसा हो, भविष्य के होने का भरोसा हो, झूंठा ही सही, अनिश्चित ही सही, कल्पनाओं में ही सही, तो हम उसके लिये कुछ भी कीमत चुकाने के लिये तैयार रहते हैं। अपना विद्यमान वर्तमान, वर्तमान का सुख–दुःख, वर्तमान की सुविधाएं और सुकून आगामी संभावित भविष्य के लिये पूरी तरह कुर्बान कर देते हैं।

बालकों को यद्यपि आज खेलना–कूदना, घूमना–फिरना, मिलना–जुलना, खाना–पीना, पहिनना–ओढना, बनाव–शृंगार और मौज–मस्ती करना अच्छा लगता है और पढना–लिखना, कसरत–व्यायाम या स्वास्थ्यवर्धक भोजन उन्हें कम ही पसंद होता है। जब तक बालक अपने भविष्य के बारे में जागरूक और सचेत न हो तब तक उन्हें उक्त कामों में लगा पाना लगभग असंभव है; पर ज्यों ही उनके चित्त में भविष्य की कल्पना आकार लेती है, वे अपने वर्तमान के समस्त आकर्षणों को तिलांजलि देकर शुष्क पढाई–लिखाई और हाड़तोड़ कसरत में जुट जाते हैं, उनका जोर बेस्वाद स्वास्थ्यवर्धक भोजन पर बढ जाता है।

भविष्य में अच्छी नौकरी मिले, बड़ा व्यापार हो, बहुत धन कमा सकें और ऐश्वर्य का उपभोग कर सकें, उसके लिये वर्तमान के बचपन के उस अतुलित आनंद का त्याग कर डालते हैं, जिसके गीत गाते हुए कवि लोग थकते नहीं।

भविष्य की परवाह में आज की बेपरवाही खत्म हो जाती है और तो और आज का दिन इसलिये कंजूसी से अभावों में व्यतीत करता है कि कल के लिये धन उपलब्ध रह सके। आज व्यायाम का श्रम इसलिये करता है कि कल स्वस्थ रह सके, आज इसलिये भूखा रहता है कि कल खा सके।

आगे बचे रहने वाले कुछ संभावित कमजोर, रुग्ण और मरियल से 30–40–50 वर्षों की बेहतरी के लिये आज के बचपन के, तरुणाई के और चढते यौवन के ऊर्जावान, अशक्त 25–30 वर्ष अपनी अरुचि की गतिविधियों में बर्बाद कर देता है।

हम अपनी आगामी पीढी के लिये बहुत कुछ करते हैं और उससे भी अनन्तगुणा और करना चाहते हैं; क्योंकि हमें उनके होने का भरोसा है। हालांकि उनके उपभोक्ता हम स्वयं नहीं हैं, तब भी हम स्वयं कष्ट पाकर भी उनके लिये कुछ करना चाहते हैं; क्योंकि हमें भरोसा है कि वे हैं, वे होंगे।

इसप्रकार हम पाते हैं यदि हमें अपने भविष्य की एक छोटी सी किरण भी दिखाई दे तो हम उसके लिये कोई भी कीमत चुका सकते हैं, तब क्यों नहीं हम अपने आगामी भव के लिये कुछ करना चाहते हैं ? सिर्फ आगामी भव के लिये ही नहीं वरन आगामी अनंतकाल के लिये।

यदि आगामी संभावित 30–40 साल के लिये विद्यमान 30–40 साल कुर्बान कर सकते हैं, तो आगामी अनंतकाल के लिये क्या नहीं किया जा सकता है ? उसके लिये कौनसी कीमत अधिक है ? उसके लिये तो कोई भी कीमत चुकाई जा सकती है न, चुकाई जानी चाहिये न!

अपने भविष्य के प्रति हम लोग सचमुच ही अत्यधिक संवेदनशील हैं, हम अपने सलोने भविष्य के लिये आज कड़ी मेहनत करते हैं, कड़ी मेहनत की कमाई को आज की अपनी सुविधाओं के लिये उपयोग में नहीं लेते हैं और कल के लिये बचत करते हैं, भविष्य में कोई अनहोनी न हो जाय, इसके लिये बीमा करवाते हैं, जिस पैसे से अपने आज की सुविधा के लिये कोई उपयोगी वस्तु खरीदी जा सकती थी उस पैसे से हम अपने काल्पनिक भविष्य के लिये काल्पनिक सुरक्षा खरीद लेते हैं और आज का विद्यमान वर्तमान जरूरी साधनों के अभावों में ही गुजार देते हैं।

अपने भविष्य के लिये इतने सजग और संजीदा हम लोग यदि अपने आगामी भव के बारे में इतने बेपरवाह बने रहें तो इसे क्या कहा जाये ?

हमें आज जिस वस्तु की कोई आवश्यकता नहीं, निकट भविष्य में भी जिसके उपयोग की कोई निश्चित संभावना भी नहीं, वह वस्तु वर्षों तक हम अपने छोटे–छोटे, महंगे घरों में यत्नपूर्वक इसलिये सहेजकर रखते हैं कि कौन जाने भविष्य में कब इसकी

जरूरत पड़ जाये, अपने भविष्य के लिये इतने गंभीर हैं हम।

उम्रभर हम अनेकों लोगों की मानसिक गुलामी सिर्फ इसलिये करते हैं कि कौन जाने वे कब हमारे किसी काम आ जाएँ। हम जीवनभर ऐसे अनेकों लोगों से बस इसी आशा में व्यवहार रखते और निभाते हैं कि हो न हो हमें उनसे कभी कोई काम पड़ जाये। यही इस बात का प्रमाण है कि हम अपने भविष्य के प्रति कितने चिन्तित रहते हैं। तब क्यों नहीं हमें अपने आगामी अनंतकाल और अगले भव की परवाह नहीं है ?

इसका ***मतलब साफ है कि हमें अपने आगामी भव का भरोसा ही नहीं, कल्पना में भी नहीं। हमें अपनी (आत्मा की) अमरता का भरोसा ही नहीं, अर्थात् हमें अपना ही भरोसा नहीं।***

यदि अन्य शब्दों में कहूँ तो हम कह सकते हैं कि हम स्वयं अपने को नहीं जानते और पहिचानते हैं, हम अपना स्वरूप नहीं जानते हैं। हमें यह मालूम नहीं कि ''मैं कौन हूँ, मेरा स्वरूप क्या है ?''

एक ओर तो हमें इस जीवन के बाद अपने अस्तित्व का भरोसा नहीं है और दूसरी ओर हमारी आगामी पीढियाँ जो हमसे सर्वथा भिन्न हैं, जिनमें हमारा और हममें जिनका अत्यन्ताभाव है, उनमें हमारा ''ममत्व–एकत्व और अपनत्व'' इस बात को इंगित करता है कि हम अपने स्वरूप को नहीं जानते–पहिचानते हैं।

अपनी आगामी पीढियों को ''मैं'' या ''अपना'' मानना तो अत्यंत स्थूल भूल है और यह मान्यता हमारी समझ की स्थूलता ही प्रदर्शित करती है।

हम कहें कुछ भी, बातें कुछ भी करें, पर हमारा व्यवहार हमारे अभिप्राय की पोल खोल ही देता है। **हमें स्वयं अपने आगामी अनंतकाल की परवाह नहीं है, हम उसके उत्थान के लिये कुछ नहीं करते है और (देह परम्पराओं से) अपनी आगामी पीढियों के इंतजाम के प्रति जिस ढंग से समर्पित रहते हैं, इसके मायने स्पष्ट है कि देह परम्परा की आगामी पीढियों को हम अपनी मानते हैं और अपने स्वयं के भविष्य के बारे में हमारा कोई चिन्तन ही नहीं है। हमारी सारी समस्याओं की जड़ यही है।**

हमने कभी यह सोचा ही नहीं कि किस प्रकार ''सुख क्या है'' इस प्रश्न का जवाब इसके साथ जुड़ा हुआ है कि ''मैं कौन हूँ'', ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही हमारे सुख–दु:ख की और हमारे हित–अहित की परिभाषाएं भी बदल जाती हैं। किस तरह?

यह जानने के लिये पढें इस शृंखला की आठवीं किश्त –

(क्रमश:)

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल की नवीनतम रचना –

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन का विमोचन

दिनांक 20 फरवरी 2015 को वार्षिकोत्सव के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की नवीनतम रचना ''कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन'' का समारोह पूर्वक विमोचन पण्डित श्री शिखरचंदजी विदिशा वालों के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ एवं उनकी ओर से उपस्थित जनसमुदाय को उक्त कृति सप्रेम भेंट की गई।

श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल ने विमोचन के लिये उक्त कृति चांदी की मंजूषा में पण्डित श्री शिखरचंदजी को प्रस्तुत की और जैसे ही उन्होंने उसका विमोचन किया, सभागृह में उपस्थित जनसमुदाय ने अपने स्थान पर खड़े होकर और हवा में हाथ लहराकर जोरदार हर्षध्वनि की और पार्श्व में कुन्दकुन्द शतक के पाठ के बीच सम्पूर्ण वातावरण कुन्दकुन्दशतकमय हो गया।

पण्डित रतनचंद भारिल्ल के जीवन व साहित्य पर शोधकार्य सम्पन्न–

शोधग्रंथ ''पण्डित रतनचंद भारिल्ल के साहित्य का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' का भव्य विमोचन

एवं शोधकर्ता डॉ. जिनेन्द्र जैन का अभिनन्दन

पण्डित रतनचंद भारिल्ल के जीवन और साहित्य पर किये गये शोधकार्य के शोधग्रंथ ''पण्डित रतनचंद भारिल्ल के साहित्य का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' का भव्य विमोचन दिनांक 20 फरवरी को श्री टोडरमल स्मारक भवन में एक भव्य समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सभागृह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय के बीच जैसे ही श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर ने शोधग्रन्थ का विमोचन किया, उपस्थित जनसमुदाय ने अपने स्थान पर खड़े होकर और हवा में हाथ लहराकर जोरदार हर्षध्वनि कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

उक्त अवसर पर शोधकर्ता श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर ने उक्त ग्रन्थ की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी व्यक्ति के जीवनकाल में ही उसके व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर पीएच.डी. होना कोई सामान्य घटना नहीं है, देशभर में इस प्रकार के मात्र कुछ ही उदाहरण हैं जिनमें श्री अटलबिहारी वाजपेयी जैसी हस्तियाँ शामिल हैं।

इस अवसर पर पीएच.डी. की उपाधि पाने के उपलक्ष्य में श्री जिनेन्द्र शास्त्री का अभिनन्दन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने किया।

ज्ञातव्य है कि श्री जिनेन्द्र शास्त्री की धर्मपत्नी डॉ. सीमा जैन ने **''डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन''** विषय पर शोधकार्य करके पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। डॉ. भारिल्ल के ऊपर यह दूसरी पीएच.डी. है और तीसरा शोधकार्य भी प्रगति पर है।

मंगल अवसर श्री वीतराग देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अवश्य पधारिये

मंगल अग्रिम आमंत्रण पत्रिका

श्री कुंदकुंद-कहान दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल ट्रस्ट, मुंबई द्वारा नवनिर्मित श्री सीमंधरस्वामी दिगंबर जिनमंदिर का

श्री १००८ शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, दि.१७ मई से शुक्रवार, दि.२२ मई, २०१५ तक

प्रिय तत्त्वरसिक साधर्मी,

शुद्धात्म सत्कार। जिनशासन के आधारभूत पुनीत देव–शास्त्र–गुरु की परम्परा में जिनागम के अद्भुत रहस्यों का उद्घाटन करने वाले आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सातिशय प्रवचनों एवं प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की आत्मार्थ पोषक तत्त्वचर्चा से सम्पूर्ण देश के मुमुक्षु साधर्मी जिनवाणी के परमशान्ति प्रदायक सिद्धान्तों के अमृत से लाभान्वित हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप ही पूर्ण वीतरागता को प्राप्त आराध्य देव की आराधना हेतु मुंबई के उपनगर विलेपार्ले में अत्यंत मनोहारी श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर एवं श्री कुन्दकुन्द – कहान स्वाध्याय भवन का नवनिर्माण हुआ है तथा तीर्थधाम सोनगढ की पाषाण निर्मित भव्य लघु रचना की गई है।

इस जिनायतन के मुख्य आकर्षण के रूप में जीवंत तीर्थंकर श्री सीमंधरस्वामी की उन्नत ७९ इंच की अत्यंत मनोहारी धवल पाषाणमयी प्रतिमा तथा हम सब के परमोपकारी तारणहार कृपानिधान पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जीवंत सदृश्य प्रतिकृति स्थापित की जायेगी। इस जिनमंदिर का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार, दिनांक १७ मई से शुक्रवार, दिनांक २२ मई तक आयोजित किया जा रहा है।

जिनशासन के इस सर्वोत्कृष्ट महोत्सव में आपको सविनय आमंत्रित करते हुये हम गौरवान्वित हैं। आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर, इस पवित्र महोत्सव के साक्षी बनकर, अनादिकालीन मोह को विस्मृत करके, अपने चैतन्य आनंद का भोग करें, ऐसी भावना है। इस अवसर पर पंचकल्याणक की नवीनतम प्रस्तुति के साथ पूज्य गुरुदेवश्री के मंगल प्रवचन, पूज्य बहिनश्री की मांगलिक तत्त्वचर्चा एवं देश के प्रमुख विद्वानों के समागम का लाभ भी प्राप्त होगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस मंगल बेला पर अवश्य पधारकर जिनशासन के प्रति वात्सल्य एवं भक्ति का परिचय देंगे। आपके पधारने से हमारे गौरव, विश्वास एवं आनन्द में वृद्धि होगी। इस महोत्सव में पधारने से पहले अपना आवास फार्म शीघ्र भेज दें, जिससे हम आपकी समुचित व्यवस्था कर सकें। आप हमारी वेबसाईट पर जाकर, ऑनलाइन भी आवास फार्म भर सकते है। आवास फार्म भेजने की अंतिम तिथि १५–०३–२०१५ है।

: निमंत्रक :

श्री कुंदकुंद–कहान दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल ट्रस्ट

नूतन जिनमंदिर – ४७, चर्च रोड, धनजीभाई मैदान के सामने, विलेपार्ला [वेस्ट], मुंबई–४०००५६

☎ 022 - 2663 1165 | info@parlajinmandir.org | www.parlajinmandir.org | /parla.jinmandir | /tatvacharcha

सम्पादकीय –

संस्कार

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वैसे शासन तो आवश्यकतानुसार स्वयं छोटी-छोटी जगहों पर भी अपने शिक्षाकेन्द्र स्थापित करता है, सो यह तो जिला स्तर का नगर है, अत: यहाँ भी शासकीय शिक्षा की आद्योपान्त व्यवस्था है, फिर भी शासन ने निजी शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहित कर रखा है और भरपूर अनुदान भी दे रखा है; क्योंकि शासन से भी यह बात छिपी नहीं है कि शासकीय शिक्षाकेन्द्रों की तुलना में निजी शिक्षा संस्थान श्रेष्ठ सेवायें करते हैं, अच्छा परीक्षा परिणाम देते हैं। पर गत कुछ समय से इस शिक्षाकेन्द्र की छवि धूमिल हो रही है।

इस शिक्षा संस्थान की छवि धूमिल होने में छात्रों से कहीं अधिक हाथ प्राचार्य एवं अध्यापकों की अक्षमता, अयोग्यता एवं उनकी आर्थिक कमजोरी का था, साथ ही व्यवस्थापिका समिति का नियुक्तियों के समय अनावश्यक हस्तक्षेप एवं देखरेख में लापरवाही और राजनेताओं की स्वार्थपरक नीति का था।

श्री अरहंत जैन इसी नगर के शासकीय शिक्षा संस्थान की माध्यमिक शाला के निवर्तमान प्रधानाध्यापक थे। यद्यपि उन्हें अपने जमाने का एक सफल प्रधानाध्यापक कहा जा सकता था; क्योंकि उन्होंने अपने परिश्रम, प्रतिभा और नैतिकता के बल पर छात्रों में तो एक अच्छे प्रधानाध्यापक की पहचान बना ही ली थी, जनता में भी जनप्रिय हो गये थे। पर सहायक अध्यापकों से अपेक्षित सहयोग न मिल पाने के कारण उनके कठिन परिश्रम का पूरा लाभ छात्रों को नहीं मिल पाता था। इस कारण उन्हें मन में असंतोष भी बना रहता था, परन्तु परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी बन गई थी कि वे सम्पूर्ण समर्पण के बाद भी कुछ कर नहीं पा रहे थे।

जब भी वे अपने अधीनस्थ अध्यापकों पर कुछ कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही करते तो अध्यापकगण लापरवाही से प्रतिक्रिया प्रगट करते हुए यह कहकर उनका सामना करने को तैयार हो जाते कि ''बहुत करेगा तो स्थानान्तरण ही तो करा सकता है, कोई जान थोड़े ही ले लेगा।''

(क्रमश:)

चिदायतन में भूमिशुद्धि संपन्न

हस्तिनापुर (उ.प्र.) : भगवान शांतिनाथ अकंपन कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा प्रस्तावित तीर्थधाम चिदायतन हेतु क्रय की गई भूमि की शुद्धि समारोहपूर्वक संपन्न हुई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की, जिसमें सर्वप्रथम श्री पवनजी जैन मंगलायतन ने चिदायतन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्री अजितजी बड़ौदा ने संचालन करते हुए प्रस्तावित चिदायतन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम में मुम्बई, दिल्ली, बड़ौदा, जयपुर, उदयपुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर, बड़ौत, मेरठ, आगरा, सहारनपुर, अलीगढ, खतौली, लंदन आदि स्थानों से अनेक साधर्मीजनों ने पधारकर लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि चिदायतन में भव्य मंदिर, स्वाध्याय भवन, छात्रावास, भोजनालय, विद्यालय, अतिथि निवास, प्राकृतिक चिकित्सालय, शोध केन्द्र आदि का निर्माण प्रस्तावित है।

कार्यक्रम का संयोजन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन ने किया।

हार्दिक बधाई

कुरावड-उदयपुर (राज.) निवासी ललितकुमार महावीरलाल भगनोवत की पौत्री **सौ. प्रियंका जैन** का शुभविवाह **चि. नितिन जांगड़ा** सुपुत्र बृजलाल जैन मुम्बई के साथ दिनांक 8 फरवरी को संपन्न हुआ। एतदर्थ जैनपथप्रदर्शक हेतु 2000/- रुपये प्राप्त हुये।

शोक समाचार

आगरा (उ.प्र.) निवासी श्री शिखरचंदजी मोठ्या (जैन पायल) का दिनांक 4 फरवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

8 मार्च	जयपुर	सेमीनार
2 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
12 अप्रैल	दिल्ली	उपकार दिवस व मुमुक्षु मण्डल दिल्ली का स्वर्ण जयंती समारोह
17 से 21 अप्रैल	मंगलायतन	गुरुदेवश्री जयन्ती
26 अप्रैल से 2 मई	सोलापुर	इन्द्रध्वज विधान
17 से 22 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर
11 जून से 15 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

2 मार्च 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

पण्डित प्रकाशचंदजी 'हितैषी' सम्पादक, सन्मति सन्देश, नई दिल्ली लिखते हैं –

''श्रद्धेय सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी समयसार की तत्त्वकथनी से प्रभावित होकर अपने कुलधर्म को छोड़कर दिगम्बर धर्म में दीक्षित हुये थे। उन्हें अध्यात्म और तत्त्व से इतनी अधिक रुचि थी कि उनका जीवन ही अध्यात्म और समयसारमय हो गया था। लौकिक चर्चा व लौकिक कार्यों में उनकी रुचि रंचमात्र भी नहीं थी। निरन्तर तत्त्व का अध्ययन-मनन करना तथा देशना में भी आत्मस्पर्शी तत्त्व-प्ररूपणा की वर्षा करना उनका दैनिक कार्यक्रम था। सोनगढ तो अध्यात्म का नंदनवन बन गया है। प्रत्येक कल्याणार्थी मानव उनकी देशना सुनकर अभिभूत हुए बिना नहीं रहता था।''

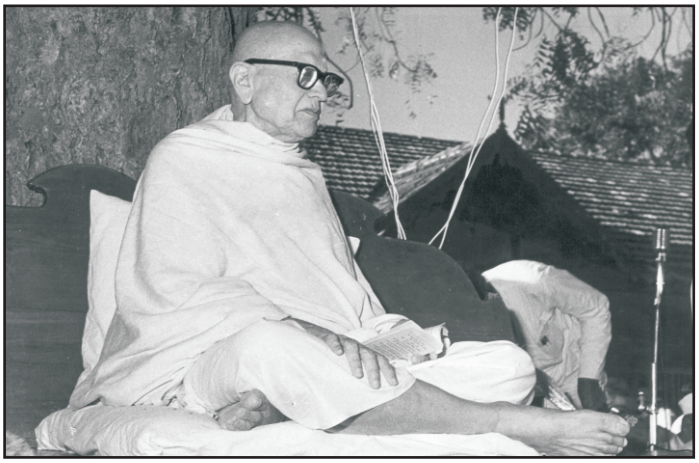

अब... डॉ. भारिल्ल जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI
सुख, शान्ति, समृद्धि

जयपुर (राज.) : अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मर्मस्पर्शी प्रवचन अब जिनवाणी चैनल पर प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक नियमित दिखाये जायेंगे। यह क्रम एक वर्ष तक नियमित चलेगा। स्मरणीय है कि इसके पूर्व अहिंसा चैनल, साधना चैनल व जी-जागरण चैनल पर विगत 10 वर्षों से आपके नियमित प्रवचन प्रसारित किये जाते रहे हैं। **– अखिल बंसल**

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूँ के तत्त्वावधान में संपर्क **(A National Graduate Conference)** सेमिनार में दिनांक 23 व 24 फरवरी को वाद-विवाद, निबन्ध व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने गौरवपूर्ण प्रदर्शन करते हुए सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किये। ज्ञातव्य है कि इन प्रतियोगिताओं में अनेक शास्त्री विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित हुये थे। सभी प्रतियोगिताओं का विस्तृत परिणाम निम्नानुसार है –

(1) वाद-विवाद प्रतियोगिता – 'आधुनिक जैन युवाओं में जैन जीवन-शैली की प्रासंगिकता' पक्ष से प्रथम स्थान मयंक जैन ठगन टीकमगढ विपक्ष से प्रथम स्थान अनुभव जैन सिलवानी ने प्राप्त किया।

(2) निबन्ध प्रतियोगिता – 'जैन विद्या के अध्ययन-अध्यापन की वर्तमान में प्रासंगिकता' प्रथम स्थान मयंक जैन टीकमगढ ने प्राप्त किया।

(3) सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता – प्रथम स्थान पवन जैन मुम्बई, द्वितीय स्थान नरेश जैन भगवां एवं तृतीय स्थान सौरभ जैन ने प्राप्त किया।

मेरठ (उ.प्र.) में दिनांक 24 मई से 10 जून तक होने वाले 49वें वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य पधारें। इस शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों का समागम प्राप्त होगा।

संपर्क सूत्र – **(1) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com (2) सौरभ जैन (मंत्री), शिविर आयोजन समिति, नवकार टेक्सटाइल, 74, खंदक बाजार, मेरठ (उ.प्र.) फोन-09897241464; आवास हेतु संपर्क – अंबुज जैन, मोबा. 09837020293**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127